26 / 12 / 79 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

राजयोगी अर्थात त्रिस्मृति स्वरूप

बनने का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा इस देह में विराजमान अपने मस्तक पर धारण तिलक को देख रही हूं

➳ _ ➳ मैं डबल तिलकधारी हूं

→ राजतिलक है मेरे मस्तक पर

- विश्व राज्य अधिकारी का तिलक

→ दूसरा राजयोगी तिलक

- विशेष तिलक है यह
- यह स्मृति का तिलक है
- तीन बिंदुओं का तिलक है
- ब्राह्मण जीवन की बचपन में मिला तिलक है यह
- ज्ञान सागर बाप का दिया तिलक है यह
- ज्ञानवृक्ष बीज शिव बाबा का दिया तिलक है यह

➳ _ ➳ मैं त्रिस्मृति स्वरूप भव की वरदानी आत्मा

→ पहली स्मृती है

- ज्योति बिंदु शिव बाबा
- सिंधु समान शिव बाबा

→ दूसरी स्मृति

- मैं आत्मा....
- मेरा स्वरूप बिंदु..

→ तीसरी स्मृति

- यह अनादि ड्रामा...
- एक्यूरेट है ड्रामा...
- न्याय पूर्ण है ड्रामा

→ यह स्मृतियां कभी विस्मृत नहीं हो सकती

➳ _ ➳ मैं अमित तिलकधारी आत्मा...

→ बिंदु बाबा से योग लगा कर

- गुणों में अनंत बाबा के सानिध्य से

→ स्वयं की आत्म स्वरूप की स्मृति से

- अपने अनादि गुणों की स्मृति से

→ इस सुंदर अनादि ड्रामा के ज्ञान को धारण कर

- समर्थी विजयी आत्मा बन गई हूँ

➢➢ मैं त्रिस्मृति स्वरूप... समर्थी... विजयी आत्मा देख रही हूं स्वयं के परिवर्तन को

➳ _ ➳ देह अभिमान

→ स्व-अभिमान में परिवर्तन हो रहा है

➳ _ ➳ विकार

→ विशेषताएं बन रहे हैं

➳ _ ➳ माया के रूप

→ दासी बन गए हैं

→ सहयोगी बन गए है

➳ _ ➳ मैं मायाजीत जगतजीत आत्मा हूँ